डाक्टर भीमराव अम्बेडकर महिला स्वंय सहायता समूह पिपरासुर्गहिया (इटवा) की सफलता की कहानी.

विकास खण्ड इटवा से इटवा बढ़नी मार्ग पर 3 किलो मीटर उ. में पिपरा सुर्गहिया ग्राम के पूरब दिशा में राज्य सड़क परिवहन सड़क से 2 बीघा की दूरी पर स्थित हैं। यह समूह का गठन 15-12-02 को हुआ था। इस समूह में सभी सदस्य महिलाएं (50%) अनुसुचित जाति 50%. हैं तथा 50% सामान्य व अल्प संख्यक जाति की हैं।

इस समूह में कलावती देवी अध्यक्षा (अनुसुचित जाति की तथा परवाना खातून प्रथम कोषाध्यक्षा अल्प संख्यक जाति की समूह में चयनित हैं। श्री परवाना खातून इण्टर मीडियट की शिक्षा ग्रहण करने के 3 वर्ष बाद विकास खण्ड के माध्यम से जानकारी हासिल थी कि समूह एक अच्छी योजना है जिसमें शासन की तरफ से सवा लाख रूपये का अनुदान भी मिलता हैं तथा आसानी से ऋण बैंक द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। इसी सोच को कार्य रूप से परिणित करते हुए श्री परवाना ने अपने ग्राम के महिलाओं को बुलाकर इकट्ठा की और सभी को यह जानकारी दी कि आप सभी अशिक्षित हैं कहीं बाहर न जाने की वजह से आप लोगों को कुछ देश दुनिया की जानकारी भी नहीं हो पाती हैं। हम सभी गरीब लोग हैं ग्राम में रहने वाले हैं शहरो की सुविधा गांव में नहीं हैं। इस प्रकार शासन (मेम्बर) की तरफ से हम लोग एक समूह का गठन करके अध्यक्षा व कोषाध्यक्षा का चयन कर बाकी सभी महिलाएं सदस्य के रूप में सदस्यता ग्रहण करेगी। समूह को चलाने हेतु सर्व प्रथम अपने-अपने पास से प्रत्येक माह कुछ शुल्क देना होगा जिसका एक बैंक में समूह के नाम से खाता खुलेगा। इस प्रकार हम सभी लोग प्रत्येक माह में एक स्थान पर मिलकर बैठकर एक बैठक का आयोजन करेगें जिसमें सभी सदस्यों को बैठक में भाग लेना परमावश्यक होगा। जब समूह 6 माह तक लगातार चल जायेगा तो बैंक व विकास खण्ड के द्वारा प्रथम ग्रेडिग की जाएगी प्रथम ग्रेडिंग होने के उपरान्त परियोजना कार्यालय सिद्धार्थनगर से स्वीकृत मिलने के तत्काल बाद हम लोगों के समूह के नाम से 10000/- रू की रिवाल्विंग फण्ड की धनराशि प्राप्त हो जायेगी। जो बैंक को मिल जायेगा और यह धनराशि मिलने के बाद बैंक मैनेजर द्वारा सी.सी.एल. की कार्यवाही प्रस्तावित कर दी जायेगी। जो 15000/- रू. ही होगी इस प्रकार कुल समूह के पास 25000/- रू. अपनी बचत की धनराशि मिलाकर लगभग 30000/-रू. समूह के पास हो जायेगा और इस पैसे से हम लोग आपस में या व्यक्तिगत तौर पर 2% ब्याज पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं। तथा 6 माह

चलाने के बाद फिर द्वितीय ग्रेडिंग कराकर यदि समूह पास होता हैं तो ऋण लेने हेतु अग्रिम कार्यवाही की जायेगी ।

इस प्रकार हमें भी खण्ड विकास अधिकारी कार्यालय इटवा से सम्पर्क के दौरान मालूम हुआ जिसकी जानकारी सभी महिलाओं को दिया । इस प्रकार इस समूह को क्रियाशील करते हुए मैंने 15-12-02 को महिला समूह का गठन किया जिसका नाम डाक्टर भीमराव अम्बेडकर महिला स्वयं सहायता समूह बिपरा [illegible] रखा गया। इस समूह में सदस्यों की संख्या 10 है। प्रथम ग्रेडिंग 28-12-03 को कराया गया जिसका सी.सी.एल. 24-4-2004 को हुआ । इस प्रकार द्वितीय ग्रेडिंग 19-11-04 कराकर दिनांक 2-7-05 को भारतीय स्टेट बैंक की शाखा इटवा से 250000/-रु. का ऋण जिस पर 100000/- का अनुदान प्राप्त हुआ । ऋण का क्रिया कलाप मुर्गी पालन व्यवसाय हेतु लिया गया हैं जिस पर समूह के ऋण से प्रत्येक 1.5 माह मुर्गी पालने पर 500 बच्चे पर 40000/- रु. का खर्च प्रतिमाह होता है। 1.5 माह में बच्चे 1.5 से 2 कि.ग्रा. के हो जाते हैं। 1.5 माह के 500 बच्चे पालने पर प्रति मुर्गी का वजन 2 से 2.5 कि.ग्रा. हो जाता है जिससे 12.50 कुन्तल मुर्गी का मीट तैयार होता हैं। 1.5 माह में कुछ बच्चे मर भी जाते हैं फिर भी 12 से 12.50 कु. मीट तैयार होता हैं। इसमें मुर्गे को 4500/-रु. प्रति कुन्टल की दर से बेचने पर 40000/- की कुल बिक्री होती हैं जिसमें 40000/-रु. खर्च हो जाता है इस प्रकार शुद्ध लाभ प्रति 2 माह पर 14000/- का होता हैं कुल 4 सिफ्ट में तैयार होता है 4 माह बरसात के दिनों में बंद रहता है। इस प्रकार 4 सिफ्ट में 56000/-रु. का शुद्ध लाभ समूह को होता हैं।

खण्ड विकास अधिकारी
इटवा- सिद्धार्थनगर ।

SGSY अन्तर्गत स्वंय सहायता साईट

मुर्गीहवा
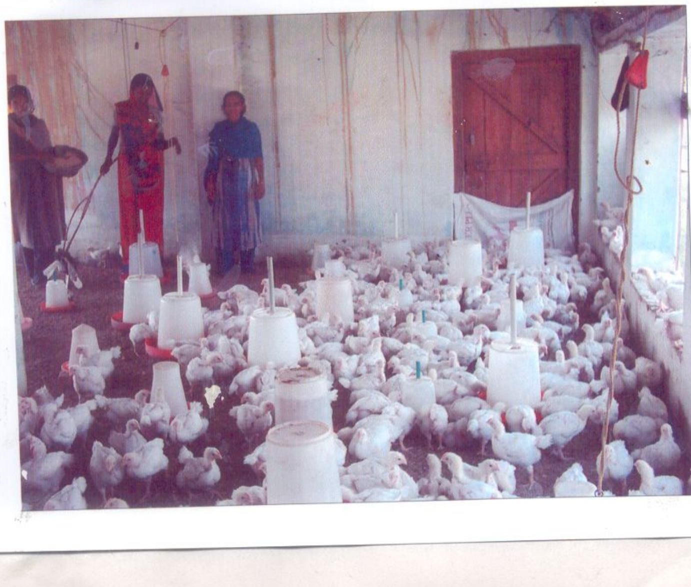
वि०ख०- इटवा